रमलसार प्रश्नावली
तथा
वर्णमातृका प्रश्न
खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,
बम्बई

॥ श्रीः ॥

# रमलसार प्रश्नावली।

तथा

# वर्णमातृका प्रश्न।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

 बम्बई.

# भूमिका

इस रमलसार-प्रश्नावलीके देखनेकी यह रीति है कि, एक पांसा काठका बना ले और उसमें एकसे लेकर चारतक संख्याके अंक लिखे १, २, ३, ४ और पहिले प्रश्न पूँछनेवाला अपने मनमें विचार ले फिर जिस किसी मनोरथके लिये तीन बार पांसेको फेंके, जो अंक तीन बार पांसेके फेंकनेसे पडें उन अंकोंको क्रमसे जोडे जैसा प्रश्नका उत्तर आवे उसको समझ ले।

आपका कृपाकांक्षी-

**खेमराज श्रीकृष्णदास,**

"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई.

श्रीगणेशाय नमः

# अथ

# रमलसार-प्रश्नावली ।

१११ अहो पूछनहार पुरुष ! शकुन उत्तम है तुम्हारा कार्य्य सिद्ध होयगा. सब कामना सिद्ध होयगी और इस ग्राममेंही अर्थ पावोगे और तुमको व्यापारमें लाभ होयगा यही चित्तमें समझो परंतु श्रीगुरुदेवकी पूजा करना अवश्य कार्य होगा.

११२ मध्यम, इस कामके करनेमें लाभ नहीं और चिन्ता बहुत होगी सोच मत करना, जो स्वप्नमें अशुभ दीखे तो व्यापारमें लाभ नहीं होय इस कामको छोड़ और कुछ करना.

११३ उत्तम, तुमको ठिकाना अच्छा मिलेगा

और चिन्ता दूर होगी, विघ्न मिटेगा, सुख होगा और कल्याण मंगल होगा और बडाई सुनोगे; जो गमन करो तो सिद्ध होगा यह काम अवश्य करना चाहिये.

११४ उत्तम, तुमको लाभ होगा और कुलकी वृद्धि होगी सुख संपत्ति मिलगी और मित्रसे लाभ होयगा, कुलदेवकी पूजा करना.

१२१ मध्यम, पहिले तुमको लाभ है पीछे जहां गमन करोगे तहां सन्मान पाओगे। पीछे तुमको कोई चिन्ता होगी भाई बन्धुकी ओरसे, इससे श्रीशनैश्वरजीकी पूजा करना जिससे तुम्हारी चिन्ता सब दूर होजायगी.

१२२ उत्तम, तुम्हारे घरमें लाभ होगा इष्ट संयोगसे पाओगे और एक महीनेके आदि अन्तमें तुमको कल्याण प्राप्त होगा और मनोकामना फलेगी, श्रीभगवान्‌की पूजा करना.

१२३ उत्तम, इस कामके करनेमें तुमको सब कामकी सिद्धि होगी, कुटुम्बकी वृद्धि और स्त्री धन लाभ अवश्य होगा इस बातमें सन्देह नहीं. तुमको चिन्ता धनकी है सो कुछ कालमें मिट जायगी.

१२४ उत्तम, तुम धन सन्तान पावोगे जो कोई वस्तु भली या बुरी मिले तो लेना मनमें कुछ चिन्ता मत करना और व्यापारमें तुमको अति लाभ है. शनैश्चर देवताका अवश्य पूजन करना चिन्ता सब दूर हो जायगी.

१३१ उत्तम, सब बात भली होगी और राज्यका काम मिलेगा और पुत्र तथा धनस्थान पाओगे जो कोई वस्तु गई होय सो मिलेगी श्रीपरमेश्वरजीका पूजन करना सब कामना सफल होंगी शकुन उत्तम है.

१३२ उत्तम, तुमने चित्तमें जो कार्य सोचा

है सो मनका मनोरथ फलेगा और बहुत हर्ष होगा मनकी चिन्ता सब दूर होगी श्रीभगवान्‌की पूजा करना लाभ होगा.

१३३ मध्यम, धनकी हानि होगी अथवा व्यापार करे तो लाभ नहीं मिलेगा इस कामको मत करना तुमको अशुभ होगा. सोमवारके दिन श्रीमहादेवजीकी पूजा करना और इस कामको छोड़ कुछ और काम करना.

१३४ उत्तम, तुमको घरमें लाभ अथवा बड़ाई होगी और जय होगी और राजाके द्वारसे लहना है और पूर्व दिशासे लहना है, मनवांछित फल मिलेगा धीरज धर श्रीकुलदेवीकी पूजा करो जिससे तुमको लाभ होगा.

१४१ उत्तम, तुमको व्यापारमें लाभ है और कपडेके व्यापारमें अति लाभ होगा और व्यापारमें ही तुमको लहना है और सब दुःख दर्द

तुम्हारा दूर होगा और मांगलिक वस्त्र मिलेगा अथवा सात दिन पीछे तुमको अवश्य लाभ होगा.

१४२ उत्तम, तुम्हारा भाई बन्धु मित्रसे मिलाप होगा और चिन्ता मिटेगी गई वस्तु हाथ आवेगी और राजाके घरसे लाभ होगा और सकल कामना फलेगी.

१४३ उत्तम, तुम्हारी मनोकामना सिद्ध होगी और धन धान्यकी तुमको चिन्ता है सो इसका फल मिलेगा और चिन्ता दूर होगी कल्याण पुत्रका लाभ पाओगे और परदेशके ग्राममेंसे वस्तु मिलेगी जो तुम्हें स्वप्नमें ग्राम जाना मालूम हो तो अति उत्तम है.

१४४ उत्तम, तुम्हारी सकल कामना सिद्ध होयँगी और धन धान्यकी तुमको चिन्ता है उसका फल मिलेगा और स्वप्नमें देवीजीके दर्शन हो तो शुभ है इस बातमें संदेह मत करना.

२११ उत्तम, तुमको फल लाभदायकहै और कुछ धर्म करना जिससे तुम्हारी चिन्ता सब दूर होगी और धान्य सुत मिलेगा अरु स्वप्नमें अच्छी बात देखो तो बुरी अरु फूलनकी माला अति उत्तम सुखदायी है.

२१२ उत्तम, तुमको अर्थसिद्धि अरु कुलमें वृद्धता होगी और मनोरथ सिद्ध होगा जो तुम्हारे चित्तमें परदेश जानेकी है तो सिद्ध करो कामना तुम्हारी सब फलेगी.

२१३ मध्यम, तुम्हारे मनमें स्त्री अथवा धनकी चिन्ता है सो एक मासके आदि अन्तमें फल मिलैगा और भाई बन्धुसे मिलाप होगा और माता पितासे पूँछकर काम करना और कुलदेवताका ध्यान ब्राह्मण भोजन कराना.

२१४ उत्तम, तुम्हारा कल्याण होगा और गई वस्तु मिलेगी तुम चिन्ता मत करो तुमको

धन धान्यकी चिंता है सब चिंता दूर होगी परंतु शनैश्चरजीकी पूजा करना उत्तम है.

२२१ उत्तम, तुमको तीन वर्षसे चिंता है अर्थात् दुःख व क्लेश है सो दूर होगा और लाभ होगा तुम चिंता मत करो शकुन उत्तम है.

२२२ मध्यम, तुम्हारे घरमें विरोध रहता है और स्त्रीसे प्रीति कम है और मित्रसे बोल चाल नहीं है जिससे तुमको क्लेश है सो श्रीभगवान् और माता पिताकी सेवा करना शकुन मध्यम है.

२२३ मध्यम, तुमको चिन्ता है और आपका माल पराये हाथमें पड़ा है क्योंकि जिस कामको करो उससे लाभ नहीं होता है और घरमें क्लेश रहता है सो कुछ दिनमें लाभदायक होगा.

२२४ मध्यम, तुमको पराये घरकी फिकर है जिससे चिन्ता बहुत है तुमको घरमें क्लेश है सो

श्रीपरमेश्वर और नवग्रहोंकी पूजा करना सब दुःख दूर होजायगा शकुन अच्छा नहीं है.

२३१ उत्तम, तुम्हारे घरमें सुख और लाभ होगा एक महीनेके आदि अन्तमें फल मिलेगा परंतु स्वप्नमें सूखा वृक्ष देखे अथवा सूना नगर देखे तो बहुत बुरा है.

२३२ मध्यम, तुम इस कामको मत करना डर है सुख नहीं मिलेगा तुम्हारे घरमें विरोध है और व्यापारमें तुमको लाभ नहीं है तुमको घर मीठा है इससे श्रीसत्यनारायणकी पूजा करना भला होगा.

२३३ मध्यम, इस कामके करनेसे तुमको चिन्ता होगी यह काम मत करना देरसे होगा कुछ और काम करना चिन्ता सब मिट जायगी अपने कुलदेवताकी पूजा करना इससे कल्याण लाभ होगा.

२३७ सामान्य है, तुम्हारे घरमें विरोध रहता है और कुटुंबमें एकाई नहीं है तुमको चिन्ता है सो डरो मत सब दुःख दूर होजायगा परंतु पीपलकी पूजा करना बहुत सुख मिलेगा.

२४१ उत्तम, तुम्हारे घरमें सुख होगा और सब कामना सिद्ध होगी जो तुम्हारे चित्तमें है सो फल मिलेगा कुछ उपाय करो तुमको लाभ होगा.

२४२ मध्यम, तुमको घर मीठा है सो तुम सावधान रहो सर्व लाभकारी है और व्यापारमें तुमको लाभ है परन्तु सूर्यव्रत धारण करनेसे तेरे शरीरको सुख मिलेगा.

२४३ उत्तम, तुमको व्यापारमें लाभ होगा और मनका सन्देह दूर होगा और सुख लाभ होगा घरमें आनंद लाभ होगा, परंतु कुछ धर्म विचारो इससे सर्व कामना सिद्ध होंगी.

२४४ उत्तम, तुमको सुख लाभ है और चिंता सब दूर होंगी कल्याण मिलेगा तुम्हारे कई तिल अथवा मस्सा हैं जिससे तुमको कल्याण लाभ होगा उत्तम है.

३११ उत्तम, तुमको अच्छे स्थानसे लाभ होगा और चिंता सब दूर होंगी और माता पिताकी सेवा करो और कुलदेवताकी पूजा तथा ब्राह्मणभोजन कराना मनोकामना पूर्ण होगी.

३१२ उत्तम, तुम्हारी मनोकामना सफल होगी और धन धान्यका लाभ तथा कुटुम्बमें वृद्धि होगी जो स्वप्नमें गज अश्व देखे तो मांगलिक भला है.

३१३ सामान्य, तुमको धनकी इच्छा है परंतु तुम्हारे वैरी बहुत हैं उनसे चिंता अधिक रहती है तुम्हारी चिंता सब दूर होगी परंतु श्रीभगवान्‌की पूजा करो बहुत लाभ होगा शकुन सामान्य है.

३१४ उत्तम, तेरा कल्याण होगा और कुछ धर्म कर, बहुत लाभकारी है और चिन्ता मतकर कामना सिद्ध होगी और अर्थ प्राप्त होगा श्रीगणेशजीका पूजन करना शकुन उत्तम है.

३२१ मध्यम, तुम्हारे घरमें लाभ होगा और व्यापारमें तुमको सुख होगा और मार्गमें तुमको चोर मिलेंगे जिनका डर बहुत है एक मासके आदि अन्तमें तुमको लाभ होगा और तुम अपने घरमें बैठे रहो व्यापारमें उपाय करो तो अति लाभ है.

३२२ मध्यम, धनका नाश होगा और मनको बहुत चिन्ता उपजोगी और अर्थ न पाओगे इस कामके करनेसे लाभ नहीं होगा तुम धीरज धरना शकुन मध्यम है.

३२३ उत्तम, तुमको अर्थ लाभ सौभाग्य मिलेगा और तुम्हारे वैरीका नाश होगा और

धनधान्यकी वृद्धि होगी और इष्ट मित्रसे लाभ होगा और तुम्हारा दुःख नाश होगा परंतु तुम श्रीसत्यनारायणका पूजन करना शकुन तुमको सामान्य है.

३२४ उत्तम, तुमको खेतीमें तथा व्यापारमें बहुत लाभ होगा और मनोकामना पूर्ण होगी और धन सुख मिलेगा और तुमको मार्गमें भय होगा और चिन्ता दूर होगी परंतु हनुमान्-जीका पूजन करना शुभ है.

३३१ उत्तम, जो तुम्हारे मनमें चिंता है सो सब दूर होगी और लक्ष्मीकी प्राप्ति होगी और कुटुम्बमें वृद्धि होगी और तुम्हारे कार्य सिद्ध होंगे यह शकुन श्रेष्ठ है.

३३२ उत्तम,तुम्हारे मनका मनोरथ सिद्ध होगा और शीघ्रही फल मिलेगा कुछ चिंता मत करो और तुम्हारे माता पिता तथा भाई बंधु इष्ट मित्रसे

प्रीति वृद्धि होगी और तुम्हारा कल्याण होगा कुछ पुण्य विचारो शकुन आनंदके देने लायक है.

३३३ उत्तम,तुमको घरके काममें सुख होगा और आपकी सब चिंता मिटेगी और भाई बंधु मित्रसे मिलाप होगा और सब चिन्ता अर्थात् दुःख नाश होगा और आपके घरमें कल्याण लाभ होगा यह शकुन उत्तम है.

३३४ उत्तम, तुमको व्यापारमें लाभ होगा और सब दुःख दूर होगा, परंतु श्रीपरमात्माका पूजन करना और कुछ धर्ममें मन लगाना तुम्हारा मनोरथ सिद्ध होगा यह शकुन उत्तम है.

३४१ उत्तम; तुम्हारा सब कार्य मन चिन्ता सिद्ध होगी और चिन्ता सब दूर होगी कुछ शोच मत करो और तुम धीरज धरो मनवांछित फल प्राप्त होगा और सबसे प्रीति लाभ होगा कुटुंबमें अति सुख होगा यह शकुन उत्तम है.

३४२ उत्तम, प्रथम तुम्हारे घरमें प्रीति बढ़ेगी और तुमको अति लाभ होगा हिम्मत करो मनो-कामना तुम्हारी फलेगी परंतु श्रीभगवान्‌की सेवा करना शकुन तुम्हारा अतिश्रेष्ठ उत्तम है.

३४३ मध्यम, तुमको वैरी बहुत लगे रहते हैं सावधान रहना चाहिये और तुमको चिन्ता बहुत होगी और चिन्तामें तुम बहुत घबराना मत जो काम तुमने बिचारा है सो न बनेगा इस काममें तुम्हें लाभ नहीं है शकुन सामान्य है.

३४४ उत्तम, इस कामके करनेसे तुमको बहुत लाभ होगा और मित्र बंधु मिलाप होगा तुमको सुख मिलेगा यह शकुन लाभदायक है.

४११ उत्तम, तुम्हारा मनोरथ सिद्ध होगा और चिंतासे खेद है सो तुमको धनधान्यका लाभ है श्रीपरमेश्वरका पूजन करना शकुन उत्तम है.

४१२ तुमको चिंता है सो कुछ दिनमें मिट

जायगी और तुम्हारी वस्तु दूसरेके हाथमें है सो धीरज धरना मिलेगी शकुन सामान्य है.

४१३ उत्तम, तेरी चिन्ता मिटेगी हिम्मत कठिन है धन उपार्जन अर्थात् व्यापार कर सब चिंता मिटेगी और कुछ पुण्य विचार शकुन उत्तम है.

४१४ उत्तम तुमको कुछ चिंता है सो एक मासके आदि अंतमें दूर होगी, व्यापारमें सुख लाभ मनोरथ फलेगा परंतु श्रीसत्यनारायणका पूजन करना शकुन भला है.

४२१ उत्तम, तुम्हारे मनमें परदेश जानेकी इच्छा है सो जाना मनोरथ सिद्ध होगा, परंतु श्रीकुलदेवताकी पूजा करना शकुन उत्तम है.

४२२ मध्यम, तुम्हारे मनमें चिंता है जो कार्य करो तो विचारके करना और कुछ हानि हुई है सो कुछ दिन पीछे लाभ होगा, परंतु

श्रीसत्यनारायणका पूजन करना सब चिंता रोग तुम्हारा दूर होगा शकुन अच्छा नहीं है.

४२३ उत्तम, तुमको घरमें लाभ होगा और वैरीका नाश होगा और सुख संपत्ति मिलेगी और कुटुम्बमें फल पुत्रका लाभ होगा परंतु एक दीपक देवताके मंदिरमें जगाओ शकुन तुमको उत्तम है.

४२४ उत्तम, आपके घरमें चिंता अर्थात् रोगवर्तै है सो दिन दशमें सब दूर होगा और तुमको फल मिलेगा और मनोकामना सिद्ध होगी, यह शकुन उत्तम है.

४३१ उत्तम, तुमको लाभ होगा और शरीर की चिंता रोग सब दूर होगा और कोई स्थानकी प्राप्ति होगी और मनोरथ सब सिद्ध होंगे अर्थात् कहीं जाओगे तहां कुशलसे आओगे उत्तम है.

४३२ उत्तम, तुमको लाभ और चिंता सब

दूर होगी और धन धान्यका लाभ सुख होगा परदेश जाओगे तो सन्मान पाओगे और शकुन उत्तम है.

४३३ तुम्हारे मनमें चिंता है सो काम मत करना तुमको दुःख होगा धीरज धरो और पुण्य करो तो नारायणकी कृपा होगी शकुन मध्यमहै.

४३४ तुम्हारे शरीरमें क्लेश है अथवा भाई बन्धुसे अनमिल रहते हो और जो मनमें काम विचारा है सो होगा और सब कामना पूर्ण होंगी शकुन उत्तम है.

४४१ तुमको फल प्राप्ति होगी और कोई उपाय करो डरो मत बड़ा लाभ होगा जो तुमने विचारा है सो मनोरथ सिद्ध होगा शकुन उत्तम है.

४४२ इस कामके करनेसे तुमको सुख न मिलेगा और चिन्ता बहुत है और राजाका डर

है परंतु इसमें लाभ है देर होगी श्रीशिवजीके मंदिरमें एक दीपकका प्रकाश करना शकुन तुमको मध्यम है.

४४३ यह मास अशुभ है और इसमें चिंता होगी और कामका बिगाड़ होगा सो जो तुम नवग्रह पूजा अथवा धर्म करो तो बड़ा कल्याण लाभ होगा यह शकुन मध्यम है.

४४४ तुमको व्यापारमें लाभ होगा और मनमें कुछ चिंता होगी अर्थात् खेद पाओगे कुछ दिन पीछे तुमको सुखदाई फल मिलेगा और सकल कामना सिद्ध होगी परन्तु श्रीराम-नामकी गोली बनाकर जलमें डालो अथवा जीवों को चुगावो तो महा सुखदायी फल मिलेगा यह शकुन तुमको महाश्रेष्ठ है.

इति रमलसार—प्रश्नावली सम्पूर्ण ।

# वर्णमातृका-चक्रम्।

| ॐ | सि | द्धं | अ | आ | इ | ई | उ | ऊ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऋ | ॠ | ऌ | ॡ | ए | ऐ | ओ | औ | अं |
| अः | क | ख | ग | घ | ङ | च | छ | ज |
| झ | ञ | ट | ठ | ड | ढ | ण | त | थ |
| द | ध | न | प | फ | ब | भ | म | य |
| र | ल | व | श | ष | स | ह | क्ष | श्री |
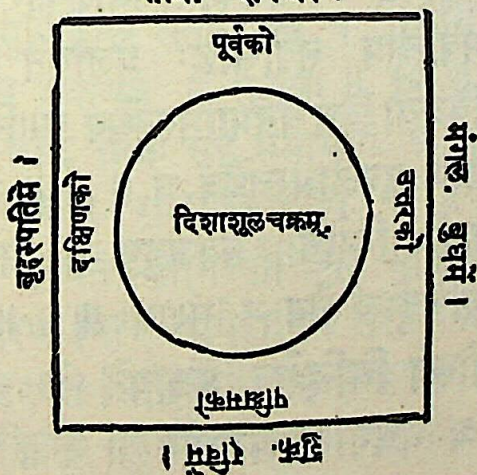
॥ श्रीः ॥

# अथ वर्णमातृका प्रश्न

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ ॐ मंत्रः श्रीसर्वनामाय सत्यं वदाय स्वाहा ॥ सिकारे सिद्धिदं सर्वं शुभं च शुभवासना ॥ सिद्धिश्च बहुलाभः स्याज्जीवितं च फलं भवेत् ॥ १ ॥ द्धंकारे बहुवृद्धिः स्याद्धर्मकामार्थमोक्षकाः ॥ बहु-लाभो भवेत्क्षिप्रं सर्वसिद्धिः प्रजायते ॥ २ ॥ अकारे विजयो विघ्नं धनप्राप्तिस्तथैव च ॥ सिध्यंति सर्वकार्याणि पुत्रलाभस्तथैव च ॥ ३ ॥ आकारे शोकसंतापो विरोधः सर्वजंतुषु ॥ आवर्तसं-भवो व्याधिर्दुःखं चैव न संशयः ॥ ४ ॥ इकारे मंगलं सौख्यं सिद्धिश्चैव प्रजायते ॥ नश्यंति सर्वरोगाश्च धनधान्यं प्रजायते ॥ ५ ॥ ईकारे

धनलाभश्च पुत्रलाभस्तथैव च ॥ सिध्यंति सर्व-
कार्याणि सौभाग्यमतुलं लभेत् ॥ ६ ॥ उकारे
सर्वसंतापो वियोगश्च भवेद्ध्रुवम् ॥ दुःखं चैव
भवेद्घोरमापदा च न संशयः ॥ ७ ॥ ऊकारे
लभते स्थानं प्रतिष्ठां चैव शोभनाम् ॥ सिध्यंति
सर्वकार्याणि ह्यर्थलाभो भविष्यति ॥८॥ ऋकारे
अर्थप्राप्तिश्च स्वर्णरत्नसमुद्भवः ॥ सिध्यंति सर्व-
कार्याणि लाभः स्याच्च न संशयः ॥ ९ ॥ ऋकारे
जायते बुद्धिर्दुःखं संताप एव च ॥ मित्रैः सह
विरोधश्च भवत्यत्र न संशयः ॥ १० ॥ लृकारे
लभते सिद्धिं मित्रैः सह समागमः ॥ आरोग्यं
जायते नित्यं राजसम्मानमेव च ॥ ११ ॥
लृकारे दृश्यते हानिर्व्याधिश्चैव भविष्यति ॥
संपत्तिहरणं नित्यं कार्यहानिर्न संशयः ॥ १२ ॥
एकारे दृश्यते सिद्धिर्मित्रैः सह समागमः ॥ ततश्च
लभते सिद्धिं शुभेनेह शुभाभवत् ॥ १३ ॥

ऐकारे बंधनं चैव विरोधश्च भविष्यति ॥ विघ्नं च प्रभवेत्तूर्णं मृत्युश्चैव न संशयः ॥१४॥ ओकारे दृश्यते सिद्धिः कार्यसिद्धिस्तथैव च ॥ सिध्यंति सर्वकार्याणि भवेच्चैव न संशयः ॥ १५ ॥ औकारे सर्वकार्याणां सिद्धिस्तस्य न जायते ॥ मित्रैः सह विरोधश्च शोकः संताप एव च ॥ १६ ॥ अंकारे च महाहानिर्बंधनं च भविष्यति ॥ महादुःखं महाशोको भयं चैव न संशयः ॥१७॥ अःकारे लभते सिद्धिं प्रतिष्ठां लभते नरः ॥ धनलाभं महत्सौख्यं लभते नात्र संशयः ॥ १८ ॥ ककारे राजसम्मानं सर्वत्र प्रियदर्शनम् ॥ कल्याणं च लभेत्तुल्या सिद्धिश्चैव प्रजायते ॥ १९ ॥ खकारे शोकसंतापौ द्रव्यनाशस्तथैव च ॥ शरीरे जायते व्याधिर्जीवितेऽपि न संशयः ॥ २० ॥ गकारे चिन्तिते कार्ये सिद्धिश्चैव प्रजायते ॥ सौभाग्यं सर्वमा-

प्नोति मित्रैः सह समागमः ॥ २१ ॥ घकारे कार्य-सिद्धिं च लभते च शुभप्रदाम् ॥ सौभाग्यं च भवेत्तस्य कल्याणं च प्रजायते ॥ २२ ॥ ङकारे कार्यनाशश्च सिद्धिर्भवति निष्फला ॥ जायते-ऽर्थश्च विफलो विफलं कर्म सर्वदा ॥ २३ ॥ चकारे विजयं कार्यं राजसंमानमेव च ॥ सर्वक्षेमाकरं राज्यलाभं चैव प्रदर्शयेत् ॥ २४ छकारे सर्व-कार्याणि रत्नानि विविधानि च ॥ आनंदः क्षेम-मारोग्यं शोभनं च सदा भवेत् ॥ २५ ॥ जकारे दृश्यते हानिः कार्यं चैव विनश्यति ॥ मित्रैः सह विरोधं च कलहं लभते नरः ॥ २६ ॥ झकारे त्वर्थलाभश्च कार्यं च सुफलं भवेत् ॥ सौभाग्य-मर्थसंप्राप्तिः कार्यं चैव फलप्रदम् ॥ २७ ॥ ञकारे शोकसंतापौ बंधनं च भविष्यति ॥ दुष्टैस्सह विरोधश्च मृत्युं चैव फलं लभेत् ॥ २८ ॥ टकारे दृश्यते लाभो विषयांश्च तथैव च । प्राप्नोति

विफलं कार्यं तुल्यं सर्वार्थसिद्धिदम् ॥ २९ ॥
ठकारे सर्वसिद्धिं च फलं राज्यं तथैव च ॥ आ-
रोग्यमथ विद्या च जायते नात्र संशयः ॥ ३० ॥
डकारे लभते सिद्धिं वर्तमानं तथैव च ॥ अत्य-
न्ततरमारोग्यं लभते नात्र संशयः ॥३१॥ ढकारे
बन्धनं व्याधिः शोकसंताप एव च । विदेश-
गमनं कार्यं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥ ३२ ॥
णकारे सुफलं विद्यात्सम्यगानन्दवान् भवेत् ॥
धनं पुत्रं च सौभाग्यं लभते नात्र संशयः ॥३३॥
तकारे चार्थलाभः स्यात्सौभाग्यमपि जायते ॥
अपरां लभते सिद्धिं सर्वकार्यार्थसाधनम् ॥३४॥
थकारे कार्यहानिश्च स्थानहानिस्तथैव च ॥
अतिसंभवरोगश्च भवेदेव न संशयः ॥ ३५ ॥
दकारे धनलाभश्च सर्वसिद्धिकरं परम् ॥ भुक्ते
सुखं वैभवं च लभते नात्र संशयः ॥ ३६ ॥

धकारे धनलाभश्च सुखमारोग्यमेव च ॥ प्राप्नोति सौख्यमतुलं मानं तत्र न संशयः ॥ ३७ ॥
नकारे भूमिसंप्राप्तिर्बहुलाभो भविष्यति ॥ आरोग्यं सुफलं कार्यं भवेत्तस्य न संशयः ॥ ३८ ॥
पकारे धनलाभश्च व्याधिबंधनमेव च ॥ उद्वेगः कलहो नित्यं जन्मना जायते नरः ॥ ३९ ॥
फकारे धनसंप्राप्तिः सर्वसंपत्तिरेव च ॥ सर्वकार्याणि सिध्यंति नैर्ऋत्यां लभते सुखम् ॥ ४० ॥
बकारे बन्धनं चैव धननाशो भविष्यति ॥ प्राप्नोति मृत्युं नित्यं वां व्याधिश्चैव प्रदृश्यते ॥४१॥
भकारे दृश्यते लाभो दृश्यमानो मनोरथः ॥ पुत्रभावं विजानीयात्तथा सिद्धिर्भविष्यति ॥ ४२ ॥
मकारे निधनं नूनमापदा परमा स्मृता ॥ न च भोगो भवेत्तस्य सर्वं भवति निष्फलम् ॥ ४३ ॥

यकारे कार्यमाप्नोति धनधान्यसमाकुलम् ॥ शोभनं च भवेत्तस्य सर्वलाभो भविष्यति ॥ ४४ ॥ रकारे तु भयं कार्यं विरोधस्य जनैः सह ॥ नित्यं च जायते हानिर्मरणं दुःखमेव च ॥ ४५ ॥ लकारे धनसंप्राप्तिर्लाभश्चापि तथैव च ॥ विपुलं च महाभाग्यं लभते नात्र संशयः ॥ ४६ ॥ वकारे कार्यनाशश्च धनहानिश्च जायते ॥ दुःखशोकजसंतापो महाभाग्यमुपस्थितम् ॥ ४७ ॥ शकारे सर्वसिद्धिश्च सुलभं च दिने दिने ॥ अर्थश्च प्रभवेन्नित्यं सर्वभावो भविष्यति ॥ ४८ ॥ षकारे धनधान्यं च सर्वं कार्यं च सिद्धिदम् ॥ कुशलं च सदा तुल्यं शोभनं च भविष्यति ॥ ४९ ॥ सकारे निष्फलं नित्यं चिंतां वै लभते नरः ॥ मनसा चिंतिते हानिः कार्यमेवं विनश्यति ॥

॥ ८० ॥ हकारे च महासिद्धिः सर्वकार्यफल-प्रदा ॥ सर्वकार्याणि सिध्यन्ति नात्र कार्या विचारणा ॥ ८१ ॥ क्षकारे सफलं कार्यं सर्व-ऋद्धिः प्रजायते ॥ सर्वत्र लभते सिद्धिं रुद्रवाक्यं न संशयः ॥ ८२ ॥

इति श्रीशंकरविरचितो वर्णमातृकाप्रश्नः

सम्पूर्णः ॥ शुभम् ॥

पुस्तकें मिलने के स्थान :-

१. खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
सातवीं खेतवाड़ी
बम्बई-४०० ००४

२. गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्या बाई चौक, कल्याण,
(जि० ठाणे-महाराष्ट्र)

३. खेमराज श्रीकृष्णदास, चौक-वाराणसी (उ. प्र.)

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४